International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(I), July- September, 2025, pp. 58-66

ऑनलाइन शिक्षा में संभावनाएं एवं चुनौतियाँ

सरोज गुर्जर[1*] | डॉ. संध्या शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक प्रोफेसर, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: tarachandgurjar202@gmail.com

Citation: सरोज गुर्जर, संध्या शर्मा (2025). ऑनलाइन शिक्षा में संभावनाएं एवं चुनौतियाँ. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(I)), 58–66.

सार

21वीं शताब्दी में प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास ने शिक्षा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव को जन्म दे दिया है, जिसमें ऑनलाइन शिक्षा एक प्रमुख भूमिका निभा रही है। विशेषकर कोविड–19 महामारी के बाद शिक्षा का रूप व्यापक रूप से डिजिटल हो गया है, जिससे यह आवश्यक हो गया है कि हम ऑनलाइन शिक्षा की संभावनाओं और चुनौतियों का समग्र अध्ययन करें। यह शोध–पत्र ऑनलाइन शिक्षा की उपयुक्तता, उसके प्रभाव, तकनीकी आधार, शिक्षण प्रक्रियाओं में बदलाव, और शिक्षार्थियों की भागीदारी के साथ–साथ उससे जुड़ी समस्याओं जैसे इंटरनेट सुविधा, डिजिटल डिवाइड, शिक्षकों की तकनीकी दक्षता, और शिक्षण गुणवत्ता जैसे पहलुओं का गहराई से मूल्यांकन करता है।ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक शिक्षा की भौगोलिक सीमाएँ तोड़ दी हैं और शिक्षण को अधिक लचीला, सुलभ, और नवाचारी भी बना दिया है। यह प्रणाली पारंपरिक के प्रयोग में असमर्थ विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक हुई है। इसके अलावा, रिकॉर्डेड लेक्चर, ई–बुक्स, और इंटरेक्टिव प्लेटफार्म ने शिक्षा को अधिक प्रभावी बना दिया है।लेकिन इसके लिए कई व्यवहारिक एवं तकनीकी विरोधाभास भी मौजूद हैं। डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता, इंटरनेट की ग्रामीण क्षेत्रों में धीमी गति, शिक्षकों, छात्रों की डिजिटल साक्षरता की कमी, मूल्यांकन प्रणाली की विश्वसनीयता, तथा सामाजिक जुड़ाव की कमी जैसे समस्याएँ ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।यह शोध–पत्र वर्णनात्मक शोध–प्रविधि के आधार पर है, जिनमें छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के बाद निष्कर्ष निकाले गए हैं। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन शिक्षा के अनेक लाभ हैं, किंतु यदि इसकी चुनौतियों का समाधान न किया गया, तो यह समान अवसरों की बजाय और अधिक सामाजिक–शैक्षिक असमानता को जन्म दे सकती है। अतः इसके सफल क्रियान्वयन हेतु एक समावेशी, तकनीकी रूप से सशक्त एवं नीति–संचालित दृष्टिकोण आवश्यक है।

शब्दकोशः *ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल डिवाइड, तकनीकी दक्षता, कोविड–19, लचीला शिक्षण, मूल्यांकन प्रणाली, ई–लर्निंग, शिक्षा की सुलभता, डिजिटल साक्षरता, उच्च शिक्षा।*

प्रस्तावना

शिक्षा समाज के समग्र विकास का आधार है। यह केवल ज्ञान का संप्रेषण ही नहीं बल्कि व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास का भी साधन है। वर्तमान समय में जब दुनिया डिजिटल युग में प्रवेश

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

कर चुकी है, शिक्षा का स्वरूप भी धीरे–धीरे बदल रहा है। विशेषतः कोविड–19 महामारी के दौरान जब शारीरिक रूप से विद्यालय और महाविद्यालय बंद हो गए, तब ऑनलाइन शिक्षा ने एक वैकल्पिक और प्रभावी माध्यम के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षार्थियों को पारंपरिक कक्षाओं से बाहर निकालकर एक स्वतंत्र, लचीला, और व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव उपलब्ध कराया है। छात्रों को विषयवस्तु तक 24X7 पहुँच, विविध डिजिटल संसाधनों की पहुँच, और व्यक्तिगत गति से पढ़ाई करने की स्वतःस्थापित सम्भावना ने इस प्रणाली को व्यापक बना दिया है। भारत में भी इस दिशा में तीव्र प्रगति हुई है, जिसमें सरकारी पोर्टल (SWAYAM, DIKSHA), निजी प्लेटफ़ॉर्म (BYJUS, Unacademy), और विश्वविद्यालय स्तर पर LMS प्रणाली का व्यापक उपयोग देखने को मिला है।

परंतु, इस प्रणाली के साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आईं – जैसे कि इंटरनेट की पहुँच, डिजिटल डिवाइड, आर्थिक विषमता, तकनीकी साक्षरता की कमी, और छात्र–शिक्षक के बीच प्रत्यक्ष संवाद का अभाव। यह स्थिति विशेषतः ग्रामीण और निम्न आयवर्ग के छात्रों के लिए बड़ी बाधा बनकर उभरी।

इस शोध–पत्र में ऑनलाइन शिक्षा की इन्हीं संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है, ताकि यह जाना जा सके कि यह व्यवस्था किस हद तक सफल हो रही है, किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है, और किस प्रकार इसे अधिक समावेशी और प्रभावशाली बनाया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसे ढांचे की दिशा की ओर इंगित करना है जो तकनीकी विकास के साथ–साथ शैक्षिक समानता को भी सुनिश्चित करे।

विषय की पृष्ठभूमि

शिक्षा का डिजिटलीकरण 21वीं सदी की प्रमुख उपलब्धियों में से एक है। इंटरनेट और मोबाइल टेक्नोलॉजी के विकास के साथ ही शिक्षण प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता महसूस की गई, विशेषतः उच्च शिक्षा में। प्रारंभ में ई–लर्निंग केवल सहायक माध्यम के रूप में देखा गया, किंतु धीरे–धीरे यह एक स्वतंत्र शिक्षा पद्धति के रूप में उभरा।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा की शुरुआत 2000 के दशक में हुई, परंतु इसे गति मिली 2015 के बाद, जब सरकार ने "डिजिटल इंडिया" अभियान के तहत SWAYAM, MOOC] vkSj DIKSHA जैसे मंच प्रारंभ किए। ये पहलें विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और विद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने में सहायक रहीं। कई निजी संस्थान भी इस दिशा में सक्रिय हुए, जिससे शहरी क्षेत्र के छात्रों को वैकल्पिक माध्यम मिलने लगे।

कोविड–19 महामारी ने ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को और भी प्रासंगिक बना दिया। जब सभी शैक्षणिक संस्थान बंद हो गए, तो ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म ही एकमात्र सहारा बन गए। परन्तु यह संक्रमणकाल केवल लाभकारी नहीं रहा; इसने समाज में डिजिटल अंतर को भी उजागर कर दिया। जिन छात्रों के पास स्मार्टफोन, लैपटॉप या इंटरनेट कनेक्शन नहीं था, वे इस शिक्षा प्रणाली से वंचित रह गए। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो गया है कि हम ऑनलाइन शिक्षा को तकनीकी दृष्टि से एकपक्षीय नहीं, किंतु सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से भी समझे। यह रिसर्च यही दिशा में एक प्रयास है, जिसके माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई है कि ऑनलाइन शिक्षा किन–किन रूपों में लाभदायक है, और वह कौन–सी चुनौतियाँ हैं जो इसकी व्यापकता को बाधा कीस रही हैं।

अवधारणा एवं परिभाषा ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन शिक्षा वह शिक्षण प्रक्रिया है, जिसमें शैक्षिक सामग्री का वितरण, शिक्षक और छात्र के बीच संवाद, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया डिजिटल माध्यमों के माध्यम से की जाती है। इसमें इंटरनेट, मोबाइल एप्स, वीडियो लेक्चर, ई–बुक्स, और लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) जैसे प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग किया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा को ई–लर्निंग, डिस्टेंस एजुकेशन, और वर्चुअल लर्निंग नामों से भी पहचाना जाता है। यह प्रक्रिया समय और स्थान के बाधाओं से मुक्त होती है और छात्रों को अपनी गति से पढ़ने की आजादी प्रदान करती है। इसका उपयोग औपचारिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं है, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कौशल विकास और शोध में इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज के समय में ऑनलाइन शिक्षा का विशेष दायरा तेजी से विस्तार कर रहा है, लेकिन इसकी गुणवत्ता, उपलब्धता और समावेशन जैसे पहलुओं पर आज भी कई प्रश्नचिह्न बने हुए हैं।

भारत जैसे देशों में, जहाँ सामाजिक और आर्थिक असमानता गहराई से विद्यमान है, वहाँ डिजिटल शिक्षा के लाभ और हानि भी वर्गानुसार भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

यह लेख इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह यह विश्लेषण करता है कि कितने प्रतिशत छात्र वास्तव में इस प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं और किन वर्गों तक यह शिक्षा अभी भी नहीं पहुँच पा रही है।

साथ ही, सरकारी प्रयासों (जैसे SWAYAM, DIKSHA, PM eVidya) की प्रभावशीलता का मूल्यांकन भी इसमें किया गया है।

- इसके साथ–साथ यह जानना भी महत्त्वपूर्ण है कि ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के सीखने की प्रक्रिया, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, और आत्म–अनुशासन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है।
- अध्ययन यह भी समझना चाहता है कि क्या ऑनलाइन माध्यम शिक्षक की भूमिका को चुनौती दे रहा है या उसे नया स्वरूप प्रदान कर रहा है।
- कुल मिलाकर, इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है कि यह भविष्य की शिक्षा नीति निर्माण, तकनीकी निवेश, और शैक्षणिक सुधार की दिशा में आधार प्रदान करे।

अध्ययन की प्रासंगिकता

- कोविड–19 के बाद शिक्षा प्रणाली में हुए आमूलचूल परिवर्तन के संदर्भ में
- शिक्षा में तकनीक के एकीकृत उपयोग की बढ़ती प्रवृत्ति को समझने हेतु
- ग्रामीण–शहरी शैक्षणिक असमानताओं के विश्लेषण हेतु
- छात्रों और शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता का मूल्यांकन करने के लिए
- छंलां.दपतउंजंवद को सम्भावित सुझाव प्राप्त करने के लिए

अध्ययन का उद्देश्य

- वर्तमान ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति का आकलन करना
- इसके मुख्य लाभों और समस्याओं की पहचान करना
- विभिन्न सामाजिक–आर्थिक वर्गों में इसकी उपलब्धता का मूल्यांकन करना
- शिक्षकों और छात्रों के भूमिका में आए बदलाव को समझना
- डिजिटल शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना

अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन का क्षेत्र चुने गए विद्यालयों/कॉलेजों तक ही सीमित
- सर्वे उत्तरदाताओं की खुलासा कम रही
- आंकड़ों का विश्लेषण केवल गुणात्मक और प्रतिशत मेथोड्स के द्वारा किया गया
- इंटरनेट उपलब्धता और तकनीकी सुविधाओं की भिन्नता के बाद उनकी तुलनात्मक असंगतियाँ संभव
- यह शोध केवल माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा पर ही केंद्रित है, प्राथमिक शिक्षा इसमें शामिल नहीं

साहित्य समीक्षा

पूर्व शोध ऑनलाइन शिक्षा पर

- डॉ. सुरभि दयाल (2023) ने भारतीय शिक्षकों पर किए गए शोध में बताया कि ऑनलाइन शिक्षा के समय शिक्षकों को तकनीकी, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- डॉ. गोपिका एस. एवं रेखा जोस (2023) ने शोध में पाया कि 44.7% छात्र ऑनलाइन शिक्षा से संतुष्ट रहते हैं लेकिन संसाधनों की कमी के कारण समस्याएँ बनी रहती हैं।
- डॉ. जयश्री पाटिल (2022) ने इंगित किया कि महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में छात्रों के ऑनलाइन शिक्षा के अनुभवों का अध्ययन किया गया, जहाँ असमान संसाधन एक बड़ी समस्या बनी रही।
- डॉ. शिवानी चौधरी (2024) के अनुसार, ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षकों की लचीलापन को बढ़ावा दिया, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हुई।

भारत में ई–शिक्षा का विकास

- डॉ. अमित पाठक (2023) ने डिजिटल इंडिया के तहत शैक्षिक पोर्टलों वाले DIKSHA] SWAYAM की भूमिका पर प्रकाश डाला।
- डॉ. प्रदीप यादव एवं ललिता वर्मा (2022) ने सरकार द्वारा चलाई गई डिजिटल शिक्षा योजनाओं के कार्यान्वयन और उनके परिणामों का विश्लेषण किया।
- डॉ. पद्मावती साहू (2021) के अनुसार, भारत में ई–शिक्षा शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ी, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में यह गति धीमी रही।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा

- डॉ. सुहासिनी नारायण (2023) ने अमेरिका, जापान और भारत की ई–शिक्षा नीतियों की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की।
- डॉ. एस. के. रघुवंशी (2024) ने वैश्विक डिजिटल शिक्षा प्रणाली और भारत की चुनौतियों की तुलना करते हुए सुझाव दिए।
- डॉ. रिंकी अग्रवाल (2022) के अनुसार, वैश्विक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा की पहुँच अधिक है, परंतु भारत में इसकी प्रभावशीलता भिन्न स्तरों पर है।

डिजिटल डिवाइड और सामाजिक विषमता

- डॉ. मोहम्मद अशरफ (2023) ने ऑनलाइन शिक्षा में डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता समस्या पर ग्रामीण छात्रों के लिए शोध किया।
- डॉ. रवींद्र शंकर एवं अनु मेहता के मुताबिक (2024), डिजिटल डिवाइड सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा देने का काम कर रहा है।
- डॉ. वंदना त्रिपाठी ने (2022) अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की बाधाएँ अन्वेषण की।

ऑनलाइन शिक्षा और शिक्षकों की भूमिका

- डॉ. शैलजा मिश्रा (2023) के अनुसार, अधिकतर शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण के लिए प्रशिक्षित नहीं थे जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित हुई।
- डॉ. नीलम तिवारी एवं रेखा कश्यप (2024) प्रस्तुत कर सकते हैं शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता और आत्मविश्वास आधारित ऑनलाइन शिक्षण विश्लेषण।

- डॉ. हरीश चंद्र (2022) की रिपोर्ट में पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षकों की भूमिकाएँ सिर्फ विषयवस्तु तक ही सीमित नहीं रह गईं बल्कि तकनीकी सहायक की भूमिका भी हो गई।

प्रभाव कोविड–19 के बाद ऑनलाइन शिक्षा

- डॉ. मनोज कुमार शर्मा (2023) ने ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया महामहारी के बाद छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर।
- डावन राजश्री कौर (2024) के अनुसार, महामारी के बाद डिजिटल शिक्षा ने नई संभावनाएँ प्रदान की, लेकिन मनोवैज्ञानिक दूरी की समस्या रही।
- डॉ. पंकज सिंह (2022) ने कोविड–19 के बाद ऑनलाइन शिक्षा में आई बदलावों का मूल्यांकन करते हुए पाया कि इसका दीर्घकालीन प्रभाव छात्रों की सीखने की क्षमता पर पड़ा।
- डॉ. कविता आर्य (2023) ने सरकारी और निजी विद्यालयों में डिजिटल शिक्षा के तुलनात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला।

शोध प्रविधि

- **शोध की प्रकृति**

प्रकृति वर्णनात्मक एवं सर्वे आधारित शोध है जो छात्रों और शिक्षकों की दृष्टिकोण से ऑनलाइन शिक्षा की संभावनाओं और चुनौतियों को समझने हेतु किया गया।

- **जनसंख्या और क्षेत्र**

शोध का क्षेत्र उत्तर भारत के 3 राज्यों उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश के विद्यालयों और महाविद्यालयों तक ही सीमित रहा।

- **नमूना आकार एवं चयन विधि**

कुल उत्तरदाताः 200

छात्रः 120

शिक्षकः 80

चयन विधिः सहजगति नमूना चयन विधि

- **डेटा संग्रहण के उपकरण**

प्रश्नावली

शिक्षक एवं छात्र साक्षात्कार (ऑनलाइन ॅववउ मीटिंग)

डेटा विश्लेषण की विधि

संगृहीत जानकारी को प्रतिशत आधार पर प्रस्तुत किया गया है। सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग नहीं किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1ः ऑनलाइन शिक्षा के लाभों पर छात्रों की राय

लाभ	उत्तरदाताओं (%)
समय की बचत	82%
कहीं से भी पढ़ाई की सुविधा	76%
रिकॉर्डेड लेक्चर की उपलब्धता	70%
स्वयं की गति से पढ़ाई	63%

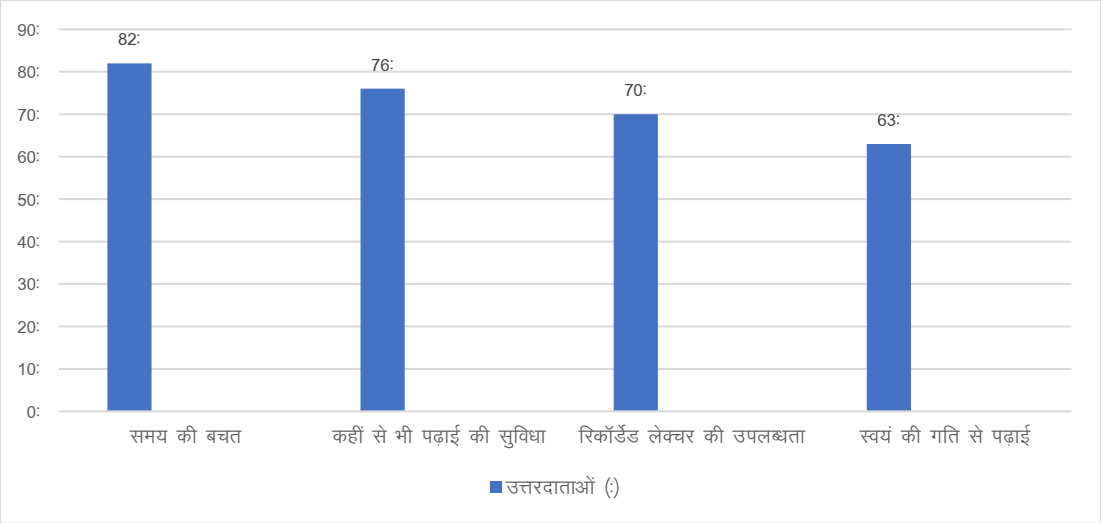

व्याख्या:

छात्रों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षा समय की बचत और लचीलापन प्रदान करती है, विशेषकर रिकॉर्डेड लेक्चर उन्हें मदद करते हैं।

तालिका 2: ऑनलाइन शिक्षा में आने वाली समस्याएँ

समस्या	उत्तरदाताओं (%)
इंटरनेट की धीमी गति	67%
तकनीकी उपकरणों की कमी	58%
ध्यान केंद्रित न कर पाना	62%
शिक्षक से सीधा संवाद नहीं	48%

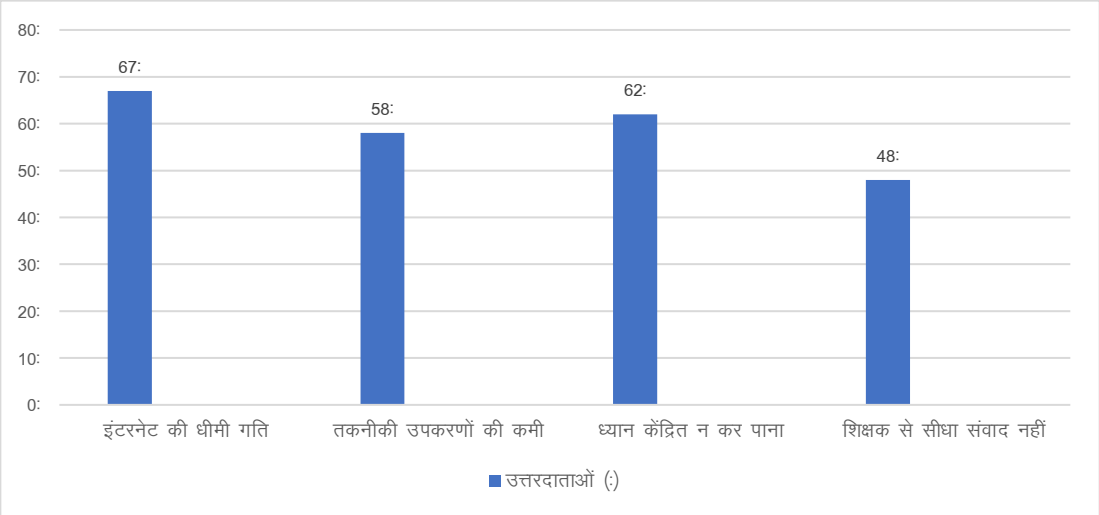

व्याख्या

तकनीकी बाधाएँ ऑनलाइन शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती हैं। छात्रों को शिक्षक से संवाद न कर पाने की समस्या भी है।

तालिका 3: शिक्षकों की दृष्टि से ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति

पक्ष	सहमति रखने वाले शिक्षक (%)
प्रशिक्षण की आवश्यकता	85%
मूल्यांकन की पारदर्शिता की कमी	72%
छात्रों की रुचि कम	66%
डिजिटल संसाधनों की कमी	60%

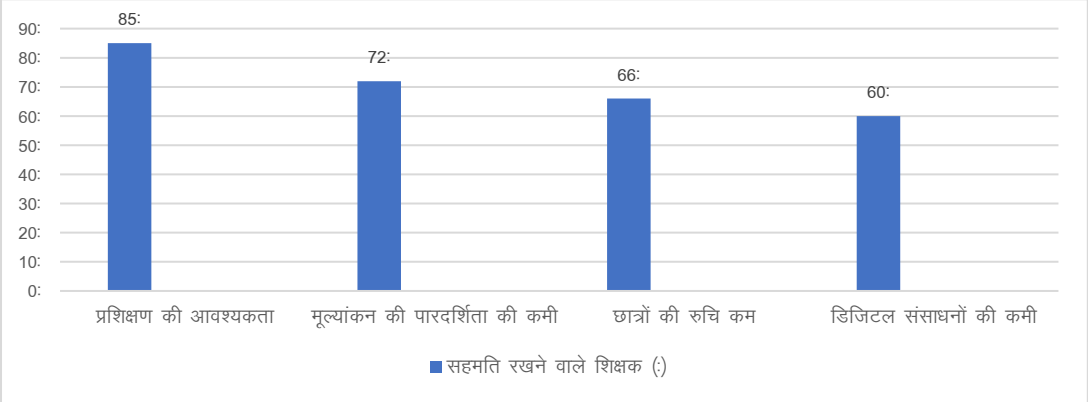

व्याख्या

शिक्षकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभव हो रही है, साथ ही छात्रों की सक्रियता में कमी एक चुनौती बनी हुई है।

तालिका 4: ऑनलाइन शिक्षा की दीर्घकालिक संभावनाएँ

पक्ष	उत्तरदाता (%)
भविष्य में प्रभावी विकल्प	74%
सहायक माध्यम के रूप में उपयोग	81%
पारंपरिक शिक्षा को पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं कर सकती	65%

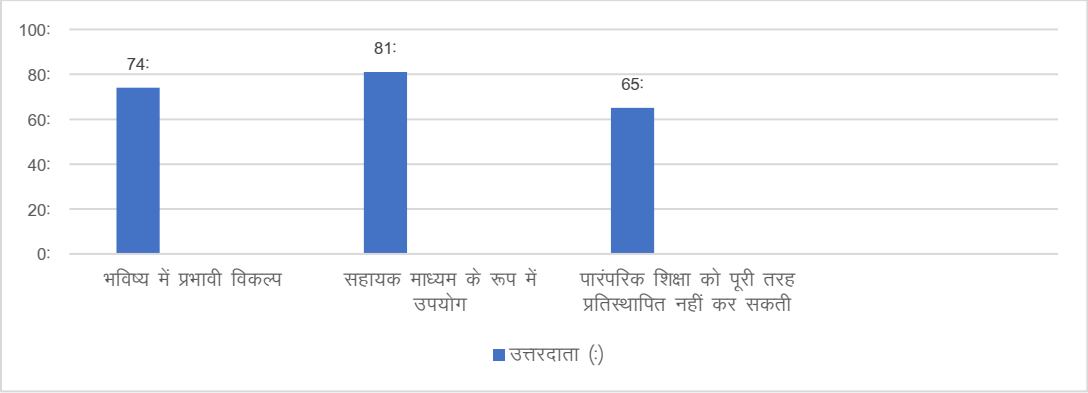

व्याख्या

अधिकांश प्रतिभागी ऑनलाइन शिक्षा को एक सहायक माध्यम मानते हैं, परंतु यह पारंपरिक प्रणाली का पूर्ण विकल्प नहीं है।

चर्चा

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि ऑनलाइन शिक्षा एक नवोन्मेषी शिक्षण प्रणाली है, किन्तु इसकी सफलता छात्रों, शिक्षकों और प्रणाली की तकनीकी दक्षता पर निर्भर करती है। छात्रों ने लचीलापन और सुविधा की प्रशंसा, किन्तु तकनीकी बाधाएं, संसाधनों की अनुपलब्धता और संवाद की कमी ने प्रभाव को सीमित कर दिया।

शिक्षकों ने भी प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता और समय प्रबंधन की आवश्यकता को चिह्नित किया। मूल्यांकन प्रणाली में विश्वास की कमी तथा छात्रों की सहभागिता में कमी एक गंभीर चुनौती बनकर सामने आई।

यह भी देखने में आया कि ऑनलाइन शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम प्रभावी रही, विशेषतः इंटरनेट और उपकरणों की अनुपलब्धता के कारण। डिजिटल डिवाइड ने सामाजिक असमानता को और गहरा किया।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा ने न केवल शिक्षा को डिजिटल पद चित्रित किया है, एक अनिवार्यता माध्यम बन गई है। महामारी ने इसकी उपयोगिता को प्रमाणित कर दिया है, लेकिन इसकी चुनौतियाँ भी स्पष्ट रूप से आमंत्रण पर आई हैं।

हालांकि, यह सुविधा छात्रों के लिए है, तो शिक्षकों के लिए यह प्रशिक्षण एवं तकनीकी दक्षता की माँग करता है। संसाधनों की असमानता के चलते समाज के कुछ वर्ग यह सुविधा न सक सके, जिससे शैक्षिक विषमता बढ़ने की संभावना बनती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि नीति–निर्माता, शिक्षण संस्थान एवं तकनीकी प्रदाता मिलकर एक समावेशी, सुलभ एवं प्रभावशाली डिजिटल शिक्षा प्रणाली का विकास करें।

मुख्य निष्कर्ष

- 82% छात्रों ने समय की बचत को प्रमुख लाभ बताया।
- 67% छात्र धीमे इंटरनेट को मुख्य समस्या मानते हैं।
- 85% शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा हेतु विशेष प्रशिक्षण चाहते हैं।
- 81% प्रतिभागी ऑनलाइन शिक्षा को सहायक माध्यम के रूप में उपयोगी मानते हैं।

सुझाव

- डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के लिए जरूरी बनाए जाएं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और उपकरणों की व्यवस्था सुनिश्चित की जामन।
- शिक्षा में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को सहायक माध्यम के रूप में अपनाया जाए, ना कि एकमात्र विकल्प के रूप में।
- मूल्यांकन प्रणाली को पारदर्शी और बहु–विकल्पीय बनाया जाए।
- मानसिक स्वास्थ्य और सहभागिता के लिए सामूहिक संवादात्मक गतिविधियाँ बढ़ाई जाएँ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दयाल, स. (2023). ऑनलाइन शिक्षकों की चुनौतियाँः एक सर्वे अध्ययन. नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद (छब्म्त्ज)।
2. गोपिका, एस., – जोस, र. (2023). कॉलेज छात्रों में ऑनलाइन शिक्षा की स्वीकृति और प्रभाव. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 45(2), 66–74।

3. पाठक, अ. (2023). डिजिटल इंडिया और शिक्षा का भविष्य. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, 28(1), 15–22।

4. चौधरी, श. (2024). ऑनलाइन शिक्षण में गुणवत्ताः एक तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षा विमर्श, 33(1), 10–18।

5. यादव, प., – वर्मा, ल. (2022). सरकारी डिजिटल पोर्टलों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन. भारतीय शैक्षिक नीति जर्नल, 17(3), 98–107।

6. नारायण, स. (2023). ऑनलाइन शिक्षा में वैश्विक प्रवृत्तियाँः भारत, अमेरिका और जापान की तुलना. तुलनात्मक शिक्षा पत्रिका, 12(4), 45–53।

7. साहू, प. (2021). ग्रामीण भारत में ई–शिक्षा की स्थिति. लोक शिक्षण, 39(2), 21–30।

8. अग्रवाल, र. (2022). डिजिटल लर्निंग की वैश्विक समीक्षा और भारत की स्थिति. उच्च शिक्षा शोध, 24(1), 33–40।

9. अशरफ, म. (2023). ग्रामीण छात्रों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता पर अध्ययन. ग्रामीण शिक्षा विश्लेषण, 8(2), 11–19।

10. शंकर, र., – मेहता, अ. (2024). डिजिटल विभाजन और सामाजिक असमानता. भारत समाजशास्त्र समीक्षा, 20(1), 65–73।

11. त्रिपाठी, व. (2022). अनुसूचित जातियों के लिए डिजिटल शिक्षा की पहुँच. सामाजिक समावेश पत्रिका, 14(2), 52–60।

12. मिश्रा, श. (2023). ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका और तैयारी. शिक्षक अध्ययन शोध, 30(3), 77–84।

13. तिवारी, न., – कश्यप, र. (2024). शिक्षकों की डिजिटल साक्षरताः एक राज्य स्तरीय विश्लेषण. शिक्षा और तकनीक, 18(1), 88–95।

14. चंद्र, ह. (2022). डिजिटल शिक्षण में शिक्षकों की बहुआयामी भूमिका. शैक्षिक समाजशास्त्र, 25(2), 61–69।

15. शर्मा, म. (2023). महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा का मानसिक प्रभाव. मनोवैज्ञानिक शिक्षा अनुसंधान, 10(3), 40–48।

16. कौर, र. (2024). ऑनलाइन शिक्षा और सामाजिक अलगाव. नारी शिक्षा विमर्श, 17(1), 31–39।

17. सिंह, प. (2022). कोविड–19 के पश्चात शिक्षा में हुए परिवर्तन. शिक्षा परिवर्तन शोध पत्रिका, 26(4), 54–63।

18. आर्य, क. (2023). सरकारी बनाम निजी स्कूलों में डिजिटल शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन. भारत शिक्षण विज्ञान, 29(2), 70–79।

19. रघुवंशी, एस. के. (2024). डिजिटल शिक्षा नीति और भारत की तैयारी. शिक्षा नीति दर्शन, 22(1), 46–55।

20. जोशी, त. (2023). ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म की संरचना और छात्रों की भागीदारी. नवाचार शिक्षा शोध, 11(2), 25–34।

❑❑❑